अमर चित्र कथा

नारद की कथाएँ

क्र. ५२० | रु. ९०



तलाश अपनी जड़ों की

जब वे मुड़ कर अपने बचपन के उन दिनों की ओर देखते हैं, जब उनके व्यक्तित्व का विकास हो रहा था, तब अनेक भारतीय बड़े स्नेह से अमर चित्र कथा की उन सचित्र पुस्तकों को याद करते हैं, जिन्होंने उनके जीवन में अत्यंत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। यह एसीके – अमरचित्र कथा ही थीं जिन्होंने उन्हें अपनी भव्य विरासत की पहली झलक दिखलाई थी।

अमर चित्र कथा १९६७ में पेश की गयीं। इस समय चुनने के लिए अमर चित्र कथा की ४०० से ज्यादा पुस्तकें उपलब्ध हैं। संसारभर में इनकी ९ करोड़ से ज्यादा प्रतियां बिक चुकी हैं।

अब अमर चित्र कथा की पुस्तकें और भी बड़े पैमाने पर उपलब्ध हैं – भारतभर में १०००+ पुस्तक विक्रेताओं के पास। अपने नज़दीकी विक्रेता का पता जानने के लिए यहां लॉग ऑन करें : www.ack-media.com. अगर किसी पुस्तक विक्रेता तक पहुंचना आसान न हो तो आप सभी पुस्तकें हमारे ऑनलाइन स्टोर **www.amarchitrakatha.com** से ख़रीद सकते हैं। हम संसारभर में हर जगह पुस्तकें बड़ी जल्दी पहुंचा देते हैं।

हमारे पुस्तकों के भंडार में से आपको अपनी मनपसंद पुस्तक चुनने में आसानी हो, इसके लिए हमने पुस्तकों को छः वर्गों में विभाजित किया है।

महाकाव्य और पौराणिक कथाएँ
महाकाव्यों एवं पुराणों की सर्वश्रेष्ठ कहानियाँ

भारतीय उत्कृष्ठ साहित्य
भारतीय साहित्य की मनमोहक कहानियाँ

हास-परिहास और दंतकथाएँ
सदाबहार लोक कथाएं, दंत कथाएं तथा विवेक और हास्य से भरी कहानियाँ

वीरांगना
वीर पुरुषों तथा महिलाओं की मन छूने वाली कहानियाँ

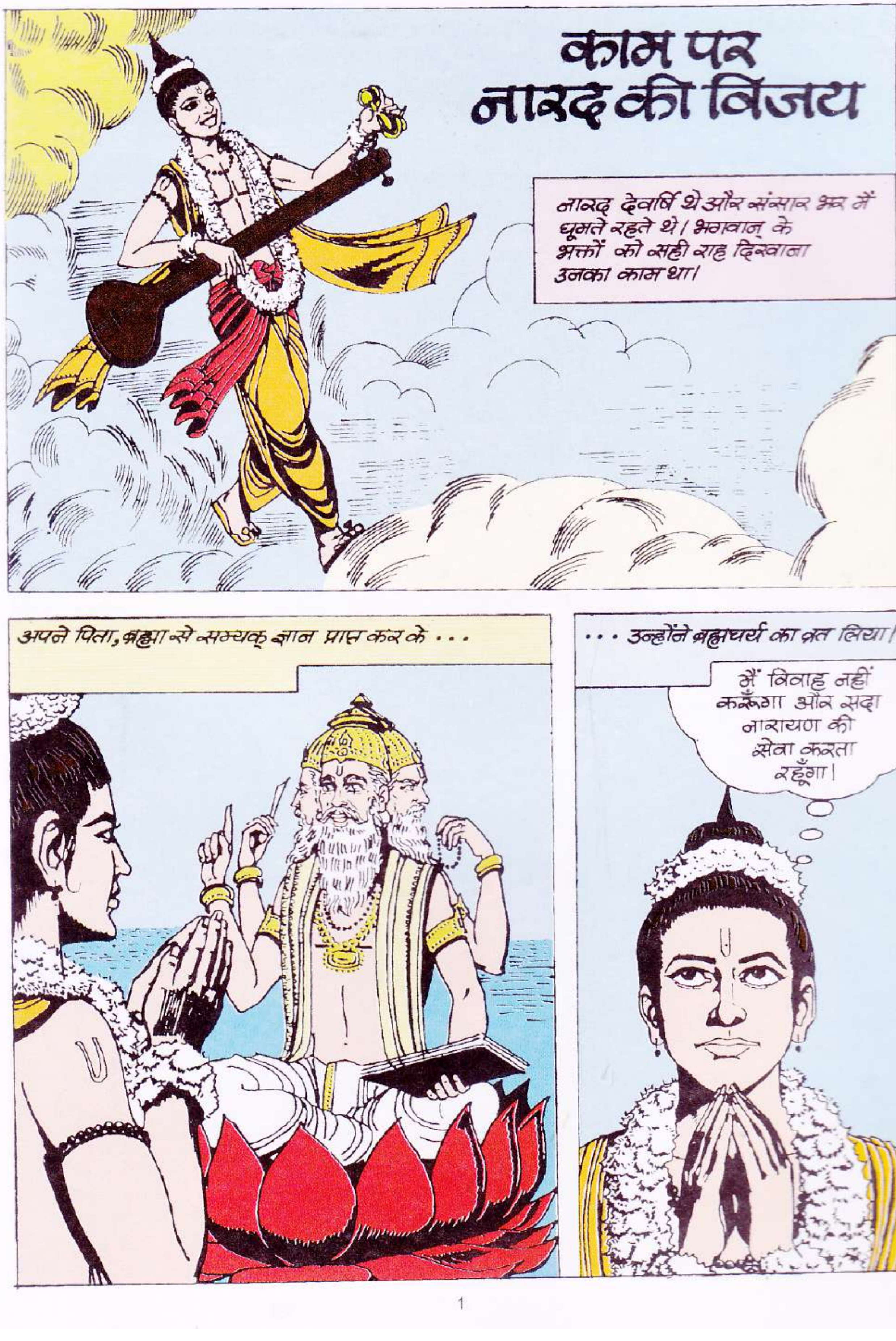
दिव्यदृष्टा
विचारकों, समाज सुधारकों तथा राष्ट्र निर्माताओं की प्रेरक कहानियाँ

समकालीन साहित्य
भारतीय समकालीन साहित्य की उत्कृष्ठ कहानियाँ

कथा	चित्र	संपादक
ओमकारनाथ शर्मा	पी.बी.कवाडी	अनंत पै

Amar Chitra Katha Pvt Ltd

ISBN 978-81-8482-311-0
Published by Amar Chitra Katha Pvt. Ltd., 204, 2nd Floor,
Dhantak Plaza, Makwana Road, Gamdevi, Marol, Andheri - 400059, India.
Printed at Zirius Images Pvt. Ltd, Bhiwandi, Thane - 421 311.
For Consumer Complaints Contact Tel : + 91-2249188881/2
Email: customerservice@ack-media.com


काम पर
नारद की विजय
नारद देवर्षि थे और संसार भर में घूमते रहते थे। भगवान् के भक्तों को सही राह दिखाना उनका काम था।
अपने पिता, ब्रह्मा से सम्यक् ज्ञान प्राप्त कर के ...
... उन्होंने ब्रह्मचर्य का व्रत लिया।
मैं विवाह नहीं करूँगा और सदा नारायण की सेवा करता रहूँगा।

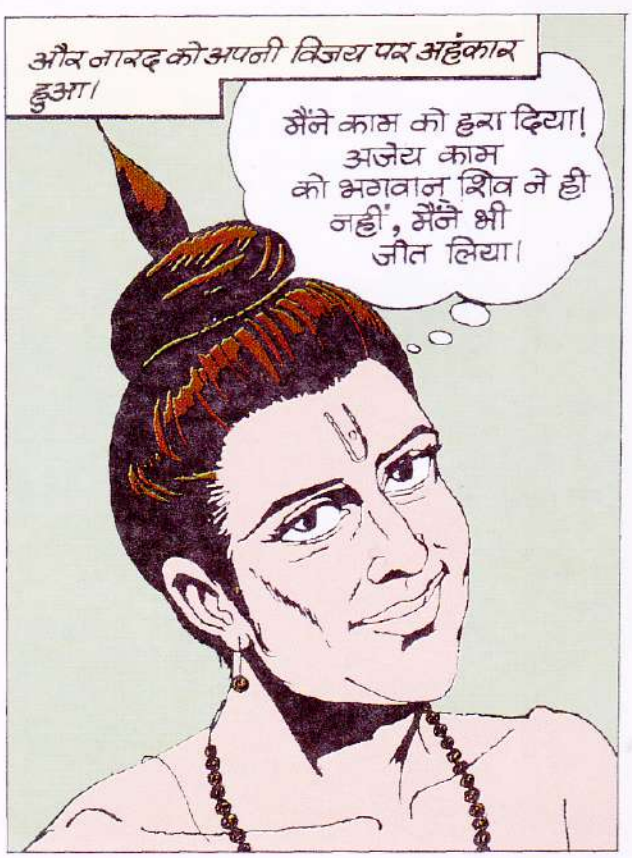

वे हिमालय में जा कर कठिन तपस्या करने लगे।
देवराज इंद्र घबराये कि नारद के मन में न जाने क्या है। उन्होंने बृहस्पति से सलाह ली।
यह तप आखिर किस लिए है?
संभव है तुम्हारे सिंहासन के लिए हो।
तो क्या करूँ? हाँ! सांसारिक विषयों से लुभा कर उन्हें पथभ्रष्ट कर दूँ।
यह सोच कर इंद्र ने कामदेव को बुलाया।
कामदेव, हमें तुम्हारी सहायता चाहिए। नारद की तपस्या भंग करनी है।
मैं प्रयत्न करूँगा, स्वामी।


कामदेव उस निर्जन, शीतल स्थान पर पहुँचे जहाँ नारद ध्यान लगाये बैठे थे।
उन्होंने पहला बाण चलाया तो...
...वहाँ जैसे वसंत आ गया...
...और एक सुंदर अप्सरा प्रकट हुई।


वह नारद के आगे नृत्य करने लगी।
परंतु ध्यानस्थ नारद के नेत्र बंद ही रहे।
मुनिराज, नेत्र खोलिए। दासी आपकी सेवा करने आयी है।
किंतु नारद ने सुना ही नहीं।
अप्सरा समझ गयी कि नारद का ध्यान भंग करना उसके बस का नहीं और वह देवलोक को लौट गयी।
कामदेव को हार माननी पड़ी।
आप महान् तपस्वी हैं, महामुनि! मैंने धृष्टता की। क्षमा माँगता हूँ।

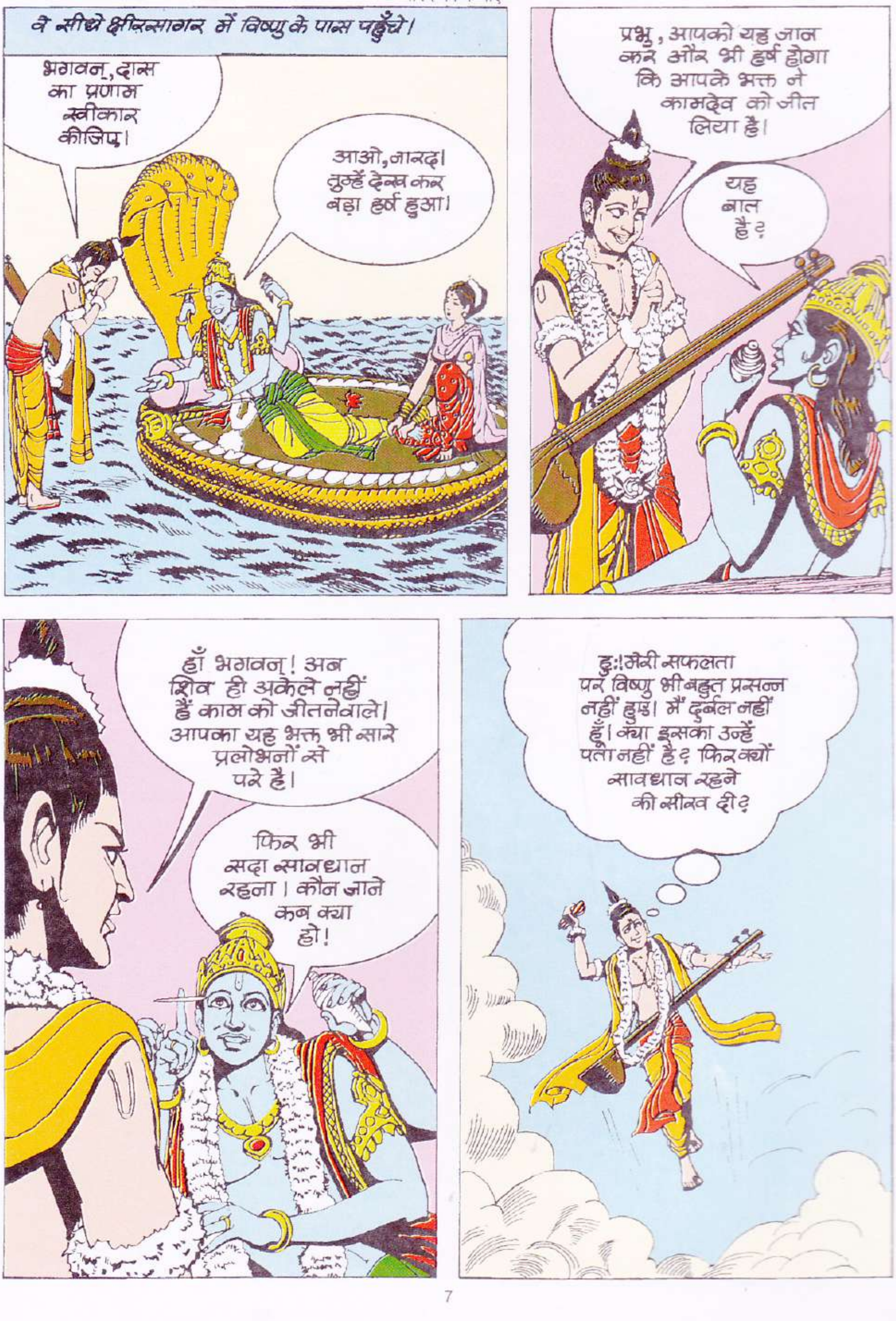

नारद ने नेत्र खोले।
ओहो, कामदेव! किसने भेजा तुम्हें?
और कौन, इंद्र देवता ने!


इंद्र से कहना कि नारद ने इच्छाओं को वश में कर लिया है। वह सब आकर्षणों से परे है।


और नारद को अपनी विजय पर अहंकार हुआ।
मैंने काम को हरा दिया! अजेय काम को भगवान् शिव ने ही नहीं, मैंने भी जीत लिया।


मैं जा कर शिव को बताऊँगा। उन्हें मानना पड़ेगा कि मैं उनसे कम नहीं।


कैलास पर्वत पर —
प्रणाम, शिव जी महाराज!
आओ, नारद! आज बड़े प्रसन्न हो। क्या बात है?
मैंने काम को जीत लिया है! इंद्र ने उसे मुझे ललचाने को भेजा था, परंतु वह असफल हुआ।
मैं तो इससे बहुत प्रसन्न हूँ! पर किसी और को मत बताना। विष्णु को तो भूल कर भी नहीं।
शिव मुझसे ईर्ष्या करते हैं। अपनी सफलता विष्णु को क्यों न बताऊँ भला? विष्णु मुझसे इतना स्नेह करते हैं। काम पर मेरी विजय की बात जान कर उन्हें गर्व ही होगा।


वे सीधे क्षीरसागर में विष्णु के पास पहुँचे।
भगवन्, दास का प्रणाम स्वीकार कीजिए।
आओ, नारद! तुम्हें देख कर बड़ा हर्ष हुआ।
प्रभु, आपको यह जान कर और भी हर्ष होगा कि आपके भक्त ने कामदेव को जीत लिया है।
यह बात है?
हाँ भगवन्! अब शिव ही अकेले नहीं हैं काम को जीतनेवाले। आपका यह भक्त भी सारे प्रलोभनों से परे है।
फिर भी सदा सावधान रहना। कौन जाने कब क्या हो!
हुः! मेरी सफलता पर विष्णु भी बहुत प्रसन्न नहीं हुए। मैं दुर्बल नहीं हूँ। क्या इसका उन्हें पता नहीं है? फिर क्यों सावधान रहने की सीख दी?


नारद चले जा रहे थे कि —
यह तो बड़ा सुंदर नगर लगता है! जैसा पहले कभी नहीं देखा! इसमें चलना चाहिए।


जब वे नगर में पहुँचे —
इस विशाल और सुंदर नगर का राजा कौन है?
आप जानते नहीं? यहाँ के राजा शीलनिधि हैं। बड़े गौरवशाली हैं। आपको महल में मिल जायेंगे।


नारद के आने का समाचार पाते ही उनके स्वागत को राजा शीलनिधि महल के बाहर आये।
पधारो, मुनिराज! हम धन्य हुए।


तभी राजकुमारी वहाँ आयी।
यह मेरी पुत्री, श्रीमती है।
कैसा रूप पाया है इस कन्या ने!
श्रीमती ने आदर से मुनि को प्रणाम किया।
सदा सुखी रहो।
यह विवाह के योग्य हो गयी है। शीघ्र ही इसके लिए स्वयंवर करवाऊँगा।
नारद अपलक राजकुमारी को देख रहे थे।
तुम्हारी पुत्री साक्षात् लक्ष्मी है। कोई हरि जैसा गौरवशाली और शक्तिशाली पुरुष ही इसका पति हो सकता है।


आपके कथन से मैं बड़ा सुखी हुआ। अब तो यही इच्छा है कि शीघ्र से शीघ्र स्वयंवर की तिथि निश्चित करूँ।
राजकुमारी को मैं पत्नी के रूप में पा जाऊँ तो मुझ जैसा भाग्यशाली तथा शक्तिशाली ब्रह्मांड में कोई नहीं होगा। परंतु प्राप्त करूँ तो कैसे ?
नारद ने बड़ी भक्ति से विष्णु का स्मरण किया।
भगवान् विष्णु ने उन्हें दर्शन दिये।
प्रभु, मेरा मुख हरि जैसा कर दो।
अवश्य हरि जैसा हो जायेगा तुम्हारा मुख।
परंतु वह हरि नहीं जो तुम समझ रहे हो!


नारद वरदान माँगते समय यह भूल गये कि हरि का अर्थ वानर भी होता है! अपना मुख वे देख नहीं सकते थे।
बड़े विश्वास के साथ वे स्वयंवर में गये कि वरमाला उनके ही गले में पड़ेगी।
यह अनोखा प्राणी कौन है? शरीर मनुष्य का और मुख वानर का! हा – हा!
किस इरादे से यहाँ आया है? संसार की अनुपम सुंदरी राजकुमारी श्रीमती का हृदय जीतने?
मेरे धन्य भाग्य कि आप सब मेरी पुत्री के स्वयंवर में पधारे। श्रीमती आप में से किसी का वरण करेगी। चलो, पुत्री, जिसे चाहो, चुन लो।


कैसा देवी जैसा रूप है!
अहा! मेरी ओर ही आ रही है!
राजकुमारी नारद की ओर देखे बिना ही आगे बढ़ गयी।


किसी कारण मुझे देख नहीं पायी! मैं चल कर उस ओर बैठ जाऊँ ताकि फिर न चूके।
इसे यहाँ आने किसने दिया? व्यर्थ की उछल-कूद कर रहा है।

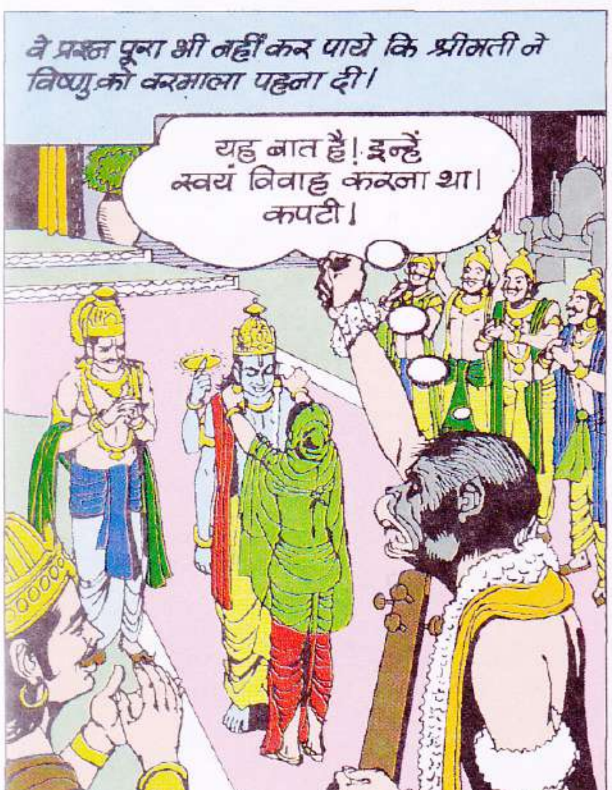

मेरे हृदय के स्वामी कहाँ हैं? वे क्यों नहीं आये?


तुम मुझे ही खोज रही हो, सुंदरी! मैं उपस्थित हूँ!
तुम्हें? हा-हा!
वानर-मुख को! हा-हा!

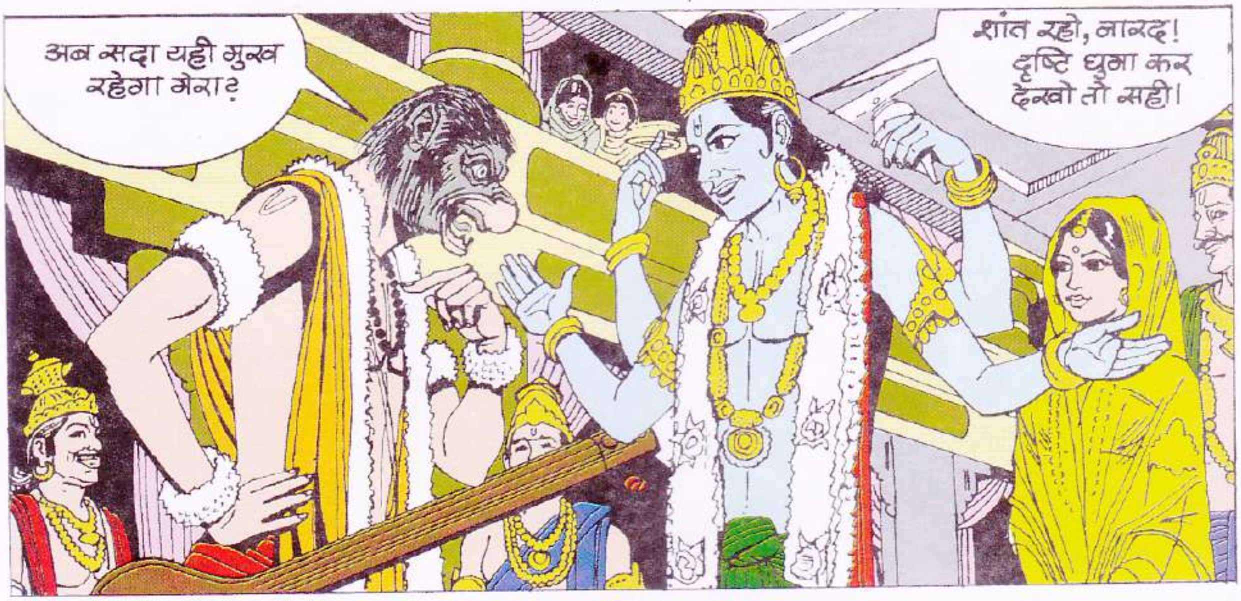

ऐसा रूपवान् कि पूछो मत!
फिर भी वानर-मुख!
वानर-मुख?


मेरा मुख सचमुच वानर जैसा है? इतने लोग भूल नहीं कर सकते! विष्णु ने मेरे साथ छल किया। वे यहाँ होते तो कारण पूछता।
विष्णु भगवान्, मेरे प्रियतम, तुम क्यों नहीं आये? तुम तो जानते हो कि तुम्हीं मेरे हृदय-स्वामी हो!


उसी क्षण —
मेरे नाथ!
अहा! आ गये! प्रभु, क्यों आपने...


वे प्रश्न पूरा भी नहीं कर पाये कि श्रीमती ने विष्णु को वरमाला पहना दी।
यह बात है! इन्हें स्वयं विवाह करना था। कपटी।

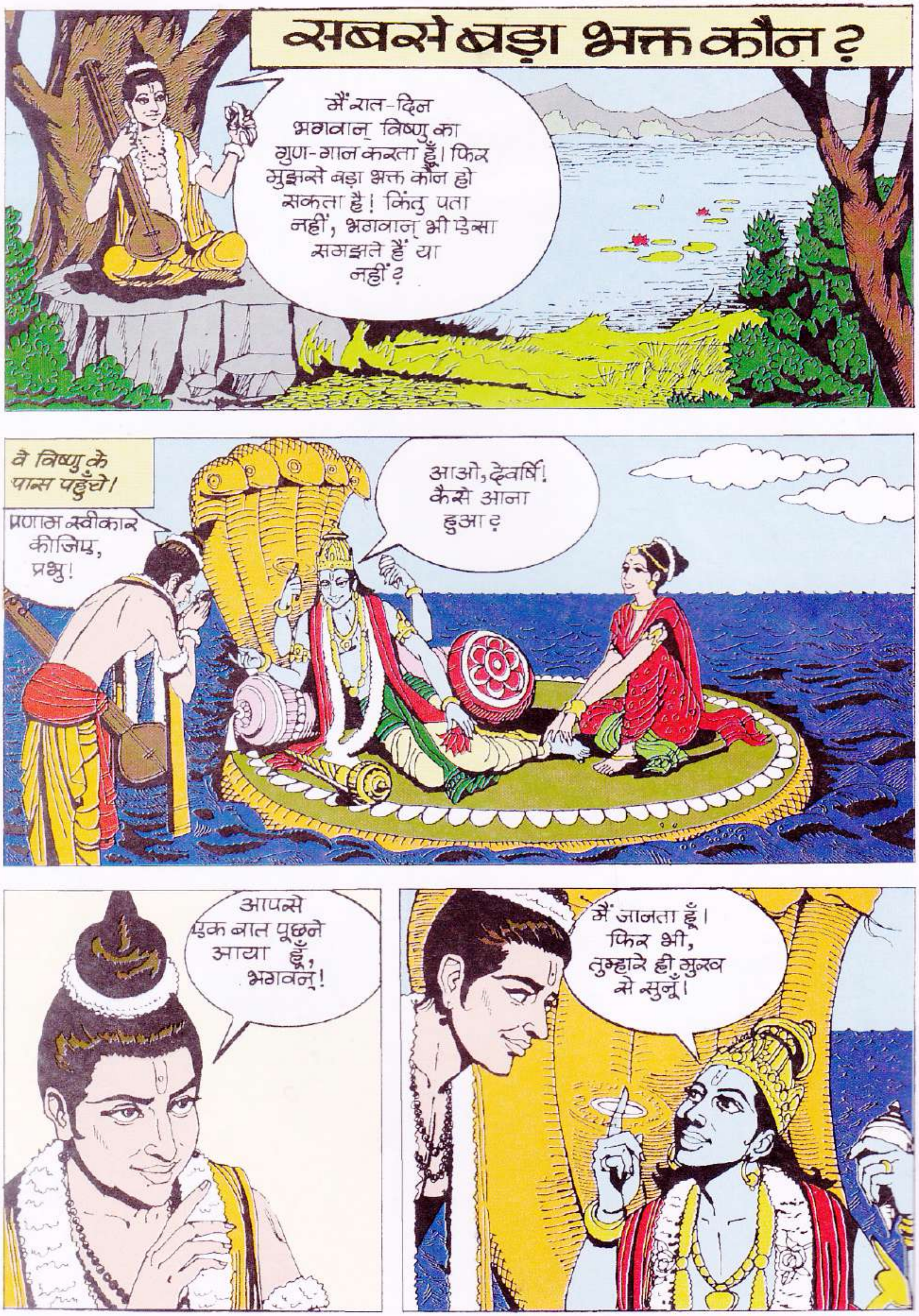

वे क्रोध में भर कर बोले —
आपने मुझे अपना जैसा मुख देने का वचन दिया था। किंतु दे दिया वानर का! क्यों?
नारद तुम संस्कृत के पंडित हो। जानते ही होंगे कि हरि का अर्थ वानर भी होता है। किस हरि का मुख तुम्हें चाहिए यह नहीं बताया था।


अब सदा यही मुख रहेगा मेरा?
शांत रहो, नारद! दृष्टि घुमा कर देखो तो सही।


यह कैसी माया है? राजा शीलनिधि, राजकुमारी, राजा-महाराजा— कहाँ गये सब? अदृश्य हो गये!
तुम्हारा वानर-मुख भी, नारद।


न कोई नगर था, न राजा, न स्वयंवर। सब मेरी माया से उत्पन्न हुए थे— तुम्हारे अहंकार को चूर्ण करने के लिए! तुम समझने लगे थे कि तुम सब विषयों से परे हो गये हो!
प्रभु, बड़ा उपकार किया मेरा! मेरी आँखें खोल दीं आपने।

सबसे बड़ा भक्त कौन ?


मैं रात-दिन भगवान् विष्णु का गुण-गान करता हूँ। फिर मुझसे बड़ा भक्त कौन हो सकता है! किंतु पता नहीं, भगवान् भी ऐसा समझते हैं या नहीं?
वे विष्णु के पास पहुँचे।
प्रणाम स्वीकार कीजिए, प्रभु!
आओ, देवर्षि! कैसे आना हुआ?
आपसे एक बात पूछने आया हूँ, भगवन्!
मैं जानता हूँ। फिर भी, तुम्हारे ही मुख से सुनूँ।

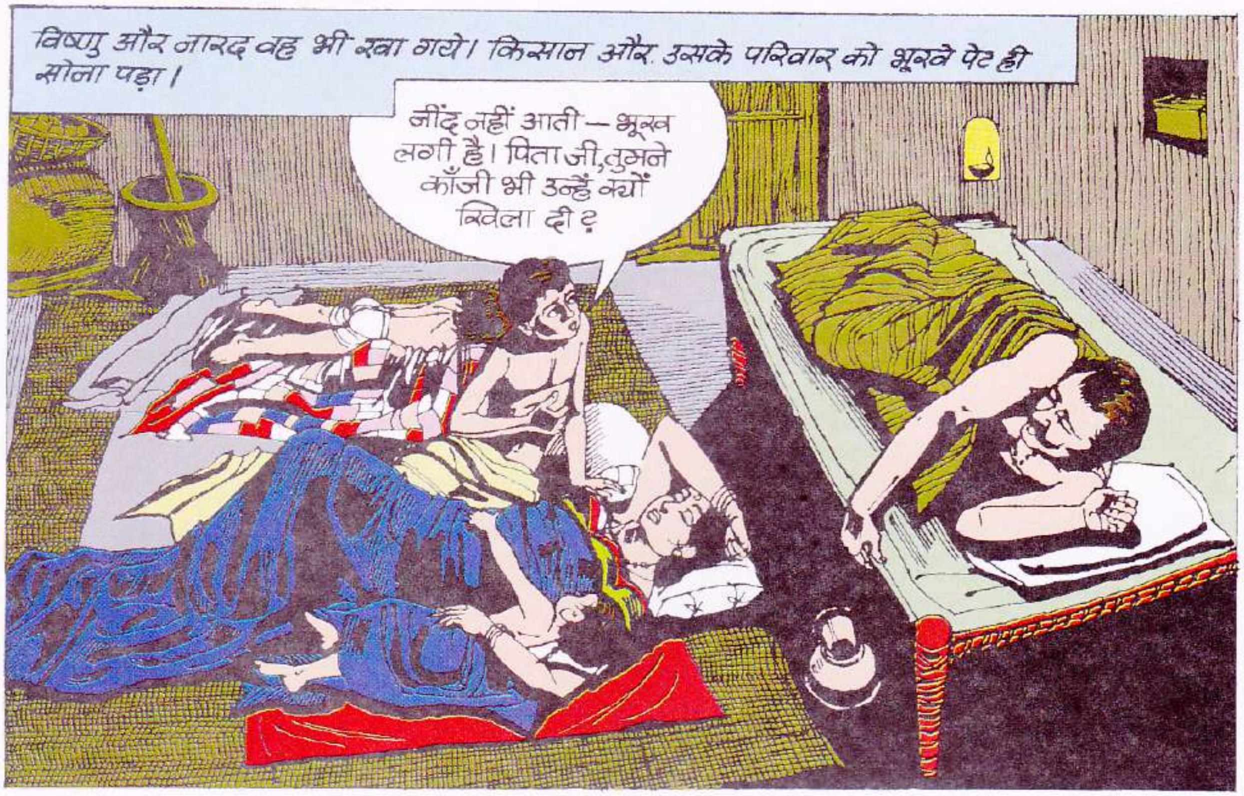

जीवन भर मैं आपका गुण-गान करता रहा हूँ-- पल-पल,क्षण-क्षण। तो मुझसे भी बड़ा कोई भक्त हो सकता है आपका?
इस प्रश्न के उत्तर के लिए तो तुम्हें मेरे साथ मृत्युलोक चलना होगा।


किसानों के भेष में विष्णु और नारद दिन ढले पृथ्वीलोक में आये और एक झोंपड़ी की ओर चले।
मेरा एक बहुत बड़ा भक्त उधर उस कुटिया में रहता है।
आश्चर्य है! मुझसे बढ़ कर किसी और की भक्ति हो सकती है?


क्या यह मेरी तरह हर क्षण आपका ध्यान लगाये रहता है?
अभी स्वयं जान जाओगे।
हरि,हरि, गोविंद!


नारायण! नारायण!
आप कहाँ से आये हैं? मेरे योग्य कोई सेवा?
हम नगर जा रहे हैं, पर अंधेरा पड़ने वाला है। वन में जंगली पशुओं का डर है। इसलिए रात भर के लिए आश्रय चाहते हैं।
मेरी कुटिया में आपका स्वागत है। और जो रूखा-सूखा घर में है आपके लिए हाजिर है।
भगवान ने मुझे आप लोगों की सेवा करने का अवसर दिया है। बड़ी कृपा है उसकी!
दो अतिथि आये हैं। उनके लिए भी रोटी बनाना।


घरमें तो इतना ही आटा है और बच्चे खाना माँग रहे हैं।
कोई बात नहीं! अतिथियोंको भर पेट भोजन करायेंगे और बच्चों के लिए काँजी बना देना।
जब वे दोनोंसारी रोटियाँ खा चुके तो—
यह सीधा-सादा गृहस्थ प्रभु का महान् भक्त कैसे हो सकता है!
मैं अब भी बहुत भूखा हूँ?
किसान रसोईघर में गया।
कुछ और बचा है भोजन?
बच्चों के लिए काँजी बनायी है—बस वही है।


विष्णु और नारद वह भी खा गये। किसान और उसके परिवार को भूखे पेट ही सोना पड़ा।
नींद नहीं आती — भूख लगी है। पिता जी, तुमने काँजी भी उन्हें क्यों खिला दी ?


अतिथि को भोजन कराना स्वयं विष्णु भगवान् को भोग लगाने के समान है, बेटा।


सुना, नारद! किसान और उसके परिवार को भोजन नहीं मिला। फिर भी वह मेरे गुण गा रहा है।
यह तो कुछ भी नहीं। मैंने तो कई-कई दिन भूखे रह कर आपका स्मरण किया है।

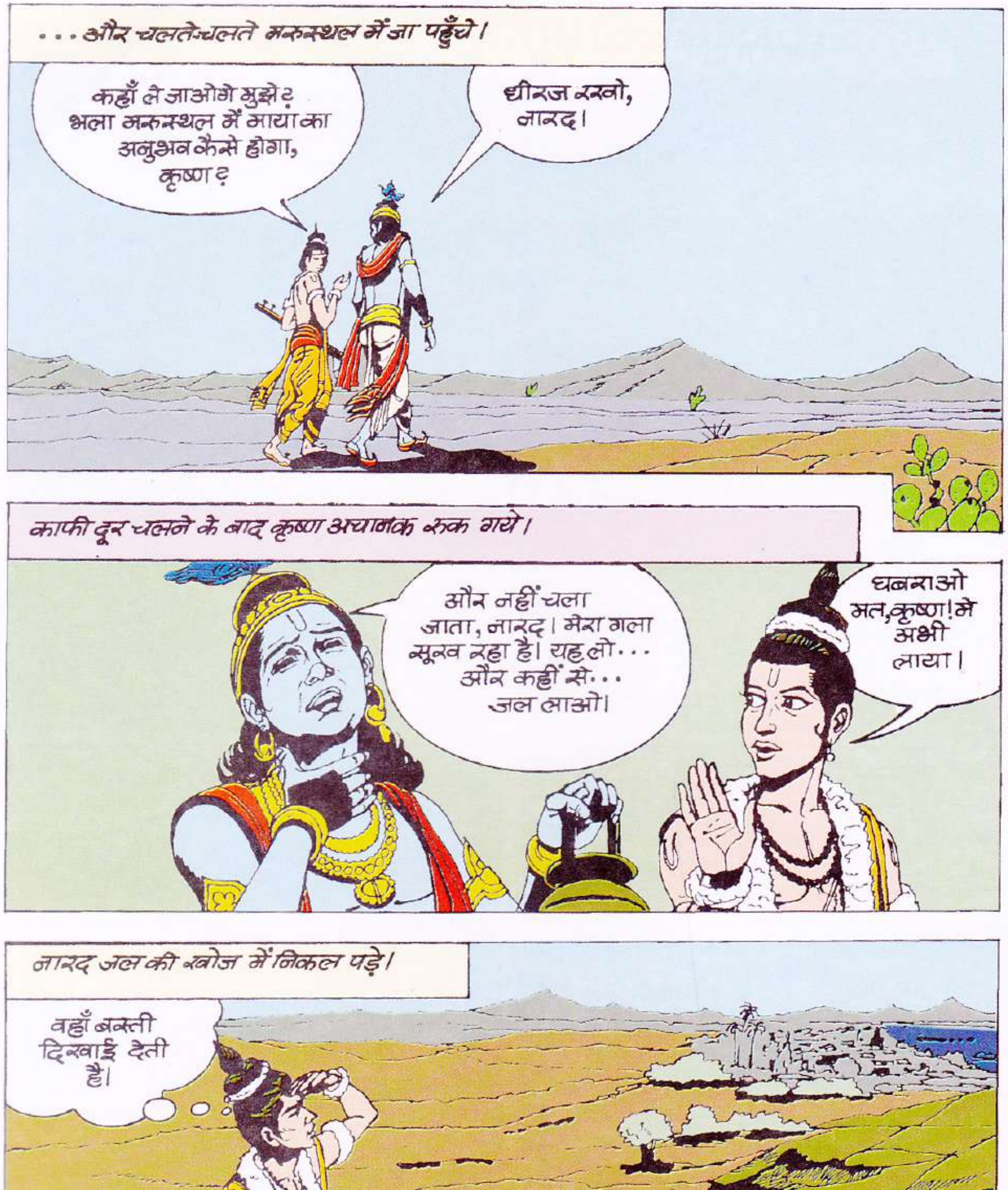

अगले दिन सुबह—
गोविंद, हरि! हरि! तुम सदा मेरे मन में बसे रहो — बस — और कुछ नहीं चाहिए मुझे।
हरि की बड़ी कृपा है। वही जग का रखवाला है!
प्रभु की दया से रात को कोई कष्ट तो नहीं हुआ आपको? जब तक जी चाहे आप लोग यहाँ रहें। मैं खेत पर जा रहा हूँ।
हम भी तुम्हारे साथ चलेंगे— तुम्हें आपत्ति न हो तो।


नारद और विष्णु किसान के साथ खेत पर गये।
यही है अपना खेत! अब मैं अपना काम करूँगा — गोविंद, हरि, हरि।
तुम तो सत्पुरुष हो! भगवान् के बड़े भक्त हो! हर घड़ी उसका नाम लेते रहते हो।
काम से जब थोड़ा-बहुत समय मिलता है, तभी उसका नाम ले लेता हूँ।
कब-कब मिलता होगा समय?
सुबह उठता हूँ तब, रात को सोता हूँ तब और दिन में जब भी काम से समय मिल जाये।
समझा।


दोनों किसान से विदा ले कर चले तो—
वह सुबह, संध्या को और दो-चार बार दिन में आपका ध्यान करता है जब कि मैं हर समय आपका ध्यान किये रहता हूँ। फिर भी आप उसे महान भक्त मानते हैं!
कारण भी जान जाओगे, नारद!
विष्णु ने एक कलश को तेल से लबालब भर कर नारद को दिया।
इसे अपने सिर पर रख कर उस पहाड़ी तक हो आओ। ध्यान रहे, तेल की एक बूँद न गिरने पाये।
कार्य सहज तो नहीं है तथापि आपकी कृपा हो तो कुछ भी असम्भव नहीं।


नारद चल दिये।
थोड़ा भी ध्यान चूका तो तेल छलक जायेगा।
ओ! ओ! इस बार तो बचा! पाँव फिसल जाता तो सारा तेल गिर जाता! और सावधानी रखनी चाहिए।
नारद पहाड़ी तक जा कर लौट आये।
लौट आये! ठीक है! अब यह बताओ– इतनी दूर जाने और आने में तुमने कितनी बार मेरा स्मरण किया?
एक बार भी नहीं! करता भी कैसे? मेरा ध्यान तो तेल और कलश में लगा था।
वह किसान कठिन श्रम करता है। फिर भी दो-चार बार मेरा स्मरण कर लेता है, और तुम एक बार भी नहीं कर पाये।
मान गया, प्रभु! जो संसार के झंझटों में रह कर भी आपका स्मरण करते हैं वे ही आपके सबसे बड़े भक्त हैं।


नारद को ज्ञान की प्राप्ति
देवर्षि नारद एक बार भगवान् कृष्ण के पास द्वारका पहुँचे।
आओ, नारद। कैसे आना हुआ?
कृष्ण, मैं यह जानना चाहता हूँ कि माया क्या है? बताओगे?
नारद, माया को बताया नहीं जा सकता। इसे अनुभव से ही जाना जा सकता है। मेरे साथ चलो।
कृष्ण और नारद द्वारका से चले...


...और चलते-चलते मरुस्थल में जा पहुँचे।
कहाँ ले जाओगे मुझे? भला मरुस्थल में माया का अनुभव कैसे होगा, कृष्ण?
धीरज रखो, नारद।
काफी दूर चलने के बाद कृष्ण अचानक रुक गये।
और नहीं चला जाता, नारद। मेरा गला सूख रहा है। यह लो... और कहीं से... जल लाओ।
घबराओ मत, कृष्ण! मैं अभी लाया।
नारद जल की खोज में निकल पड़े।
वहाँ बस्ती दिखाई देती है।


अहा! कुआँ!
अहा! कैसा देवी जैसा रूप है!
देवी, थोड़ा-सा जल पिला कर मेरी प्यास बुझाओगी?
अभी लो, महाराज!
यह तो कोई देवी ही है!


नारद सुंदरी के पीछे-पीछे उसके घर...
...पहुँचे। वहाँ कोई पुरुष बैठा था।
तुम इस घर के स्वामी हो?
घर का ही नहीं, सारे गाँव का। तुम्हें क्या काम है, महाराज?
तुम्हारी पुत्री से विवाह करना चाहता हूँ।
क्यों नहीं? तुम नवयुवक हो, स्वस्थ हो, बलवान हो। परंतु...मेरी पुत्री से विवाह कर के इस गाँव में, इसी घर में रहना पड़ेगा।
इतनी-सी बात! तुम्हारी बात मुझे स्वीकार है।
इस सुंदरी को पाने के लिए कुछ भी कर सकता हूँ।


दोनों का विवाह हो गया।
विवाह के कुछ दिन बाद मुखिया की मृत्यु हो गयी। उसका सारा काम-काज नारद को सम्हालना पड़ा।
यह काम दिन ढलने तक पूरा हो जाये!
हो जायेगा, मालिक।
नारद के चार संतानें हुईं।
पिता जी, उसे उतारो और मुझे गोदी उठाओ!


नारद सफलता के सोपान पर थे कि आँधी-तूफ़ान, वर्षा और बाढ़ के रूप में आपत्ति टूट पड़ी।
घर पानी में डूब जायेगा! कैसे जान बचायें?
पिताजी!
पत्नी और बच्चों को नौका में लेकर नारद हरहराते पानी में जान बचाने के प्रयत्न करने लगे।
परंतु नाव उलट गयी। नारद ने पत्नी को बचा सके न बच्चों को।
पिता जी!
कहाँ हो तुम? घबराओ मत! मैं आ रहा हूँ!
पिता जी!


बड़ी-सी लहर ने नारद को किनारे ला पटका।
पत्नी गयी! बच्चे डूब गये! मैं अकेला जी कर क्या करूँगा!
तभी उन्हें आवाज़ सुनायी दी—
नारद, मैं प्यासा हूँ। जल लाये?
नारद ने घूम कर देखा, सामने कृष्ण खड़े हैं।
कृष्ण! मेरी पत्नी! मेरे बच्चे! उन्हें फिर से जीवित कर दो।
नारद, किस भ्रम में हो? न कोई पत्नी थी, न बच्चे! वह सब माया थी।
कृष्ण, मुझे ज्ञान दे कर मेरा बड़ा उपकार किया है तुमने। जीवन स्वयं माया है। उससे छुटकारा पाना बड़ा कठिन है। तुम्हारी कृपा हो तभी मनुष्य उस पर विजय प्राप्त कर सकता है।

महाकाव्य और
पौराणिक कथाएँ

नारद की कथाएँ

पौराणिक कथाओं में नारद का उल्लेख सदा सम्मान के साथ किया गया है। फिर भी जन साधारण उन्हें इधर – उधर करके झगड़े लगाने वाले कहकर हंसी उड़ाते हैं। वे कहीं टिककर नहीं बैठते। वास्तविकता यह है कि वे जो भी करते हैं उससे दुष्टों की हार होती है और सज्जनता की प्रतिष्ठा बढ़ती है। नारद जी विष्णु के अनन्य भक्त हैं। मान्यता है कि वीणा का आविष्कार नारद ने किया है। नारद स्मृति और नारद स्मृति सूत्र की रचना भी उन्होंने ही की है। प्रस्तुत रचना की तीन कथाएं शिव पुराण और कुछ दंतकथाओं पर आधारित हैं। उनमें बताया गया है कि देवर्षि होते हुए थी नारद प्रलोभनों में फंस गए और उन्हें अंहकार हो गया। किन्तु जब - जब वे इन दुर्बलताओं के शिकार हुए विष्णु ने उन्हें उबार लिया। नारद धीरे - धीरे मानवीय दुर्बलताओं से ऊपर उठते गए और उन्होंने सम्यक ज्ञान प्राप्त कर लिया।

ISBN 978-81-8482-311-